लोकगीतों के विविध आयामों का विश्लेषः पश्चिमी राजस्थान के संदर्भ में

कुलदीप सिंह

सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र में लोक का वर्णन करते हुए लोकसंगीत का महत्व बताया गया है। इस में लोकगीतों के विभिन्न आयामों पर चर्चा की गई है। इसमें राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्र (मारवाड़) को आधार बनाकर उदाहरण प्रस्तुत किये गए। यहां बताया गया है कि लोकसंगीत शिशु के जन्मपूर्व से लेकर उसके जन्मोपरांत सभी संस्कारों में गुंजायमान होता है। लोकगीत में प्रकृति के महत्व को भी वर्णित किया गया है। लोकगीतों में मिलने भक्तितत्व को रूपायित किया गया है। लोक में प्रेम के संयोग और विरह के समय गाये जाने वाले गीतों का उल्लेख किया गया है। अंत मे लोकगीतों के महत्व को रेखांकित करते हुवे निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

शोध पत्र

मनुष्य जन्म से ही अपने भावों को विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त करता आया है। मनुष्य के प्रारंभिक साक्ष्यों में जाकर खोजबीन करने पर पता चलता है कि मनुष्य और संगीत का एक गहरा संबंध है। मनुष्य के बोलने की कला का अगर कोई प्राचीन साक्ष्य प्राप्त हो तो संगीत के साक्ष्य भी मिले। एक नवजात के जन्म से लेकर वृद्ध होने तक जीवन में संगीत भांति-भांति के रूप लेकर अभिव्यक्त होता है। व्यवस्थित रूप से रस से भरी ध्वनि को ही संगीत कहते है। संगीत की कला में गायन, नृत्य और वादन तीनों कलाओं का समावेश होता है।

संगीत का एक सामान्य विभाजन किया जाएं तो इसको मुख्य रूप से दो प्रमुख भागों में विभाजित कर सकते है। इसके पहले रूप को शास्त्रीय संगीत कहा जाता है जिसमें लय तान आदि के विभाजन के कुछ नियम होते हैं। वही दूसरा रूप लोक संगीत के रूप में प्रसिद्ध है जिस पर कोई तय नियम काम नहीं करते हैं। लोक संगीत किसी लेखनी के सहारे न पले बढ़े होकर यह तो लोक के कंठो का श्रृंगार बनकर प्रसिद्धि प्राप्त करता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि लोकगीतों में धरती गाती है, पर्वत गाते हैं, नदियां गाती हैं, फसलें गाती हैं। लोक संगीत प्रकृति का वह स्वतंत्र उद्गीत है जिसमें छंदबद्धता एंव अलंकारों से मुक्त होकर मानवीय संवेदनाओं के वाहक बनते है।

दिन भर के तपे मरूस्थल को शीतल करती समीर, चाँदनी रात, चीं-चीं-चीं करती तीडों की आवाजों के बीच, देर होने के डर से जल्दबाजी में काम-काज समेट हर शाम बहू-बेटियाँ किसी परिचित के घर-आग्न में इक्ट्ठा होती थी। संगीत को मंनोरजंन का माध्यम बना, हरेक शाम को सुरीली शाम बना देती थी। हास्य परिहास

हिंदी विभाग, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा (राज.)